

न्यूज ब्रीफ

भागवत कथा स्थल से

बैग चोरी में पकड़ा गया

पिहानी, हरदोई, अमृत विचार। कस्बे

में मंगलवार की रात मंसूर नगर में बल

रही श्रीमंत भागवत कथा के दौरान

एक युवक ने कथा वाचक का बैग

चोरी कर लिया। कथा वाचक की शैल

किशोर मिश्रा के बैग रात कीरी 11

बजे गाहुव हो गया था। कथा स्थलभाग

सात हजार रुपये और अन्य महत्वपूर्ण

दस्तों बैज थे। बुधवार सुबह ग्रामीणों

ने संदिग्ध युवक को पकड़ लिया और

पिटाई करने के बाद पुलिस के हवाले

कर दिया। उसकी पहली विमलेश

पाल निवासी ग्राम कुररेली थाना

हिरायावा दो रुप थे। तलाशी में

उपर्युक्त तारीख से बाजार लगभग सात

हारा रुपये बुधवार हुए, हालांकि कुछ

राशि उसने खर्च कर दी थी। कोठावाल

छोटे लाल ने बताया कि आरोपी को

हिरायावा में लंकर घटना की जांच की

जा रही है।

नागरिक सुरक्षा कोर पद

का साक्षात्कार आज

हरदोई, अमृत विचार। अंतिरिक्त

मजिस्टरेट ग्राम अरुणिमा श्रीवास्तव ने

बताया है कि जनपद में नागरिक सुरक्षा

कोर गठन किए जाने के लिए शोफ

वार्ड, डिटी डिविजनल वार्ड 16 एवं

दस्तान नियंत्रण अधिकारी के पदों के

लिए यहां कमेटी द्वारा 35 अवेदों को

पात्र पाया गया है कि जिनका साक्षात्कार

16 अक्टूबर को पूर्वान्ह 11 बजे नगर

पालिका परिवर्त के कमाण्ड कन्ट्रोल

सेंटर में किया जायगा।

कल होगा उत्तर प्रदेश

की टीम का चयन

हरदोई, अमृत विचार। अंतर्राष्ट्रीय

खिलाड़ी पूर्ण प्रतिवारी ने बताया कि

35वीं नेशनल स्टैंच ट्रिप्टिंग सब

जूनियर, जूनियर, सीनियर मास्टर,

दिव्यांग व इनवेंटर बैंगे प्रेस महिला-

पुरुष दिव्यांग वैष्णव विशिष्ट का आयोजन

किया गया था। जिसमें अंतिरिक्त

उत्तर प्रदेश टीम का चयन 17 अक्टूबर

को सीतापुर रोड स्थित शंकर व्यायामाला

में किया जा रहा है। प्रतिवारी में जिते

की टीम का चयन किया जाएगा।

उसके द्वारा कर दी है।

व्यवसायी की सड़क दुर्घटना में मौत

संवाददाता, हरदोई, भरखनी

फल, फूल एवं सब्जी भी उगाएं किसान : प्रेमावती

जिला पंचायत अध्यक्ष ने किसानों को आय बढ़ाने के लिए दी सलाह, पराली नहीं जलाने की दिलाई शपथ

संवाददाता, हरदोई

अमृत विचार। कृषि फार्म विलाग्राम चुनीं प्रांगण में आयोजित एक दिवसीय जनपद स्तरीय रबी गोष्ठी का उद्घाटन मुख्य अतिथि जिला पंचायत अध्यक्ष प्रेमावती ने फोटो काटकर एवं भाजपा जिलाध्यक्ष अंजीत सिंह बब्बन, जिलाधिकारी अनुनय ज्ञा तथा मुख्य विकास अधिकारी सान्या छाबड़ा के साथ संयुक्त रूप से दीप प्रज्ञवलित कर किया।

गोष्ठी को सम्बोधित करते हुए जिला पंचायत अध्यक्ष ने किसानों से कहा कि भारत एवं राज्य सरकार की मंशा है कि किसानों की आय दो से चार गुनी बढ़ाई जाये। इस अवसर पर अध्यक्ष ने

पुलिस के पास जा रहे पीड़ित को पीटा

शाहाबाद, हरदोई, अमृत विचार।

पिहानी थाना क्षेत्र के ग्राम देहलिया निवासी युवक को गाली गलौज करने के अरोपियों ने शिकायत

करने के लिए थाना जाते समय रासेस

में रोककर मारपीट कर घायल कर दिया। पीड़ित की तहरीर के आधार पर आरोपियों के विरुद्ध रिपोर्ट

मिठाई बड़े पैमाने पर तेवार की जा रही है। लाल, हरी, नीली रंगों से लोगों की सहेत के साथ खिलवाड़ कर रहे हैं विभाग जानवृक्षकर अनजान बना हुआ है।

नगर के बस स्टॉप के आसपास

मिलावटी मिठाई खुले आम बेंजी

जारी है। नगर में रोककर मारपीट कर दिया। पीड़ित की तहरीर के आधार पर आरोपियों की शिकायत करने के लिए यहां के ग्राम निवासी राजकुमार ने अपने

भाई संजय और पिता नरेश के साथ

उसके द्वारा जेर आकर उसकी

भतीजी को गाली गलौज किया और

जान से मार डालने की धमकी दी।

वह आरोपियों की शिकायत करने के

साइकिल से थाने जा रहा था।

विषयकों ने रासेस में रोककर उसे

डंडों से मारपीट कर घायल कर दिया। पीड़ित की तहरीर की जारी रही है। लोगों की माने

विभाग मिलावटी की जांच नहीं की जा रही है। लोगों की तरीफ में खुले आम

मिलावटी मिठाई खुले आम बेंजी

जारी है। नगर के अंदर मैं खुले आम

मिलावटी के लिए खिलवाड़ कर रहे हैं। नगर के लोगों का कहना है कि यहां पर आरोपियों की पिता-पुत्रों के विरुद्ध कर दी जा रही है।

राजेश कुशवाहा की फाइल फोटो।

अंतिम संस्कार में शमिल होकर

पांचाल घाट से लौटते समय हुए

हादसे का विकार

की शाम पचारेवा थाने के ग्रामजहां

गाव के राजीव कुमार की बोलेरों

से टकरा कर मौत हो गई थी।

मंगलवार को राजेश कुशवाहा,

जिससे राजेश कुशवाहा

हो गया है कि उसके पैर में

चीरा लगा दिया। जिसके

पांचाल घाट से लौटते समय हुए

हादसे का विकार

पर इलाज कर रहा है।

मेडिकल स्टोर पर इलाज करा

रहे युवक की मौत, लगा आरोप

संवाददाता, हरदोई, टडियावां

मेडिकल कालेज में हुआ सीपीआर जागरूकता सप्ताह के तहत प्रशिक्षण सत्र

मेडिकल कालेज में हुआ सीपीआर जागरूकता सप्ताह के तहत प्रशिक्षण सत्र

मेडिकल स्टोर पर इलाज करा

रहे युवक की मौत, लगा आरोप

संवाददाता, हरदोई, टडियावां

मेडिकल कालेज में हुआ सीपीआर जागरूकता सप्ताह के तहत प्रशिक्षण सत्र

मेडिकल कालेज में हुआ सीपीआर जागरूकता सप्ताह के तहत प्रशिक्षण सत्र

मेडिकल स्टोर पर इलाज करा

रहे युवक की मौत, लगा आरोप

संवाददाता, हरदोई, टडियावां

मेडिकल कालेज में हुआ सीपीआर जागरूकता सप्ताह के तहत प्रशिक्षण सत्र

मेडिकल कालेज में हुआ सीपीआर जागरूकता सप्ताह के तहत प्रशिक्षण सत्र

मेडिकल स्टोर पर इलाज करा

रहे युवक की मौत, लगा आरोप

संवाददाता, हरदोई, टडियावां

मेडिकल कालेज में हुआ सीपीआर जागरूकता सप्ताह के तहत प्रशिक्षण सत्र

मेडिकल कालेज में हुआ सीपीआर जागरूकता सप्ताह के तहत प्रशिक्षण सत्र

मेडिकल स्टोर पर इलाज करा

रहे युवक की मौत, लगा आरोप

संवाददाता, हरदोई, टडियावां

मेडिकल कालेज में हुआ सीपीआर जागरूकता सप्ताह के तहत प्रशिक्षण सत्र

मेडिकल कालेज में हुआ सीपीआर जागरूकता सप्ताह के तहत प्रशिक्षण सत्र

मेडिकल स्टोर पर इलाज करा

रहे युवक की म

दुर्घटना प्रसूत प्रथन

जैसलमेर की भवावह बस दुर्घटना ने इस प्रश्न को पुनः केंद्र में ला दिया है कि वातानुकूलित स्टीपर बर्से आग का गोला क्यों बन रही है। महाराष्ट्र और गुजरात में ऐसी घटनाएं पहले भी घट चुकी हैं। हादसे के बाद जांच और बयान तो होते हैं, लेकिन इनके कारों को दूर करने की कोई कोशिश नहीं होती। न तो नियमण मानकों में सुधार होता है, न ही संचालन प्रणाली में। अधिकतर वातानुकूलित स्टीपर बर्से निजी 'बॉडी बिल्डर्स' द्वारा इस उद्योग से बर्नाई जाती है कि अधिकतम सवारियों के लिए जगह बने, ताकि खरीदार अधिक किराया और मुनाफा कमा सके। ऑपरेटर भी बसों को 'शानदार' दिखाने की हो देते हुए मूल डिजिन में बदलाव के साथ अधिकतम वर्थ एवं एपर्सनिंग पापड़ और कई गैरजूली दिखावटी मनमाने मार्डिफिकेशन करवाते हैं। बर्सों में प्रयुक्त इंटरियर और अन्य सामग्रियों जैवनरोधी होनी चाहिए, लेकिन इस पर कोई ध्यान नहीं दिया जाता, जबकि इनसे निकला जहरीला धुआं जानलेवा होता है। मानक के अनुसार हर बस में दो निकास द्वारा और छत पर आपातकालीन खिड़कियां अनिवार्य होनी चाहिए, परंतु अक्सर ये नहीं होतीं। आवाजाही की गैलरी भी बेहद संकरी होती है।

विजली की अवैज्ञानिक वायरिंग, एयर-कंटीडीनिंग सिस्टम की खराब देखभाल, स्टीपर बर्सों और घटीया इन्वर्टरों के इस्टेमाल के चलते एसी स्टीपर बर्से लगातार अमुरुक्षित होती जा रही है। सड़क परिवहन और राजमार्ग मंत्रालय के 2018 में बने 'बस बॉडी कोड' के तहत अनिरोधी सामग्री, इमरजेंसी और फायर स्प्रेशन सिस्टम का प्रवाहन है, लेकिन इन मानकों को लागू करके फिर किये हैं। दरअसल, बर्सों के वास्तविक और कड़ाई से निरीक्षण का काई प्रभावी तरंग नहीं है, इसलिए यह लापरवाही बेरोकटी कर रही है। चीन ने तो तकरीबन डेढ़ दशक पहले ही अपने यहां स्टीपर एसी बर्सों के संचालन पर प्रतिबंध लगा दिया था, लेकिन भारत में देने में सीट मिलने की अनिवार्यता और हवाई सफर के महांग होने के कारण यह विकल्प शायद ही बंद किया जा सके।

इंसानी भौतिकों की कीमत पर यह विकल्प जारी रखना ही है, तो हमें अब सख्त कदम उठाने होंगे। सभी स्टीपर बर्सों में फायर डिटेक्शन सिस्टम, दो आपातकालीन निकास और जलनरोधी सामग्री को अनिवार्य किया जाए। आरटीओ और बीमा कंपनियों के बिना इन मानकों के बर्सों को सङ्कट पर उत्तरने की अनुमति नहीं देनी चाहिए। दूरस्थ राजमार्ग पर दुर्घटनाग्रस्त स्टीपर के लिए त्वरित रहत संभव नहीं होती, इसलिए बस नियमण और संचालन दोनों में बदलाई जाहज या मंट्री द्वारा की तरह पूर्व-सुरक्षा उपायों के अंतराल हर एसी बर्सी की वायरिंग अनिन्द्रिय-सुरक्षा जारी करनी चाहिए। आरटीओ की जांच केवल कागजी खानापूरी बनकर न रह जाए। जब दुर्घटनाओं के कारण बार-बार एक जैसे निकलते हों, ये सारी कावयदें को जानी चाहिए? फिलहाल राज्य के मुख्यमंत्री और प्रधानमंत्री ने शोक व्यक्त किया और मृतकों के परिजनों के लिए मुआवजा राशि घोषित कर दी, लेकिन क्या यही पर्याप्त है?

प्रसंगवथा

लेखक, जिसने गढ़े उम्मीदों से भरे शब्द

साहित्य जब अपने नैतिक पतन की परिस्थितियों से जूझ रहा हो, तब उसके हिस्से 'नोबेल प्राइज' के आने का मतलब है, साहित्य लेखन को नए सिरे से रिखिज करना। नाउम्मीदी और निराशा के बीच उम्मीदों को शब्दों से उकरने वाले विश्व विष्णुत लेखक को इस मर्त्यन नोबेल से नवाजने का एलान सुखद एहसास करवाने जैसा है। साहित्यक संसार हंगरी के राइटर 'लाजलो क्रास्नाहोरकाई' को नोबेल पुरस्कार दिए जाने की घोषणा से इसलिए खुशी ताजा रहा है कि उन्होंने नाउम्मीदी और निराशा को मिटाने के लिए मुक्तमूल प्रयोगों पर अपनी लेखनी के जरिए ऐसा नायाब तरीका गढ़ा, जिसने साहित्यक विद्या को नई उत्तराधिक प्रदान की। उनके विजनरो लेखन ने सफलता और कायमत के एसे बेजोड़ आयाम गढ़े हैं, जो भविष्य के रुचिकर भावी रचनाधिमियों को साहित्यक पन्नों को उकरने में मदद करेंगे।

5 जनवरी 1954 को हंगरी के छोटे से शहर 'गुलु' में जन्मे लास्जलो क्रास्नाहोरकाई को बचपन से साहित्य से प्यार था, किंतु उसे ही लेखनी कायर आरंभ कर दिया था। उन्होंने अपनी तमाम शिक्षा साहित्य विषय में पूरी की। निराशा से किसे उभरे और अपने भीतर पनपे अपने कायमतक पक्ष को कैसे संयुक्त बनाएं ताकि उसका विकास एवं विविध क्षेत्रों में उभरे? एक जैसे निकलते हों, ये सारी कावयदें को जानी चाहिए? उत्तराखण्ड राज्य में एक समय ऐसा भी नियमित है कि उसका विकास एवं विविध क्षेत्रों में उभरे।

तब्दील करें, को अपनी रचनाओं में प्रयोग किया, जिसे पाठकों ने खूब सपाहा। नए-नए शब्दों को गढ़ा और उनके शाब्दिक अर्थों को साहित्य में इस्टेमाल करने की रचनात्मक क्षमताओं को आंक कर ही वैश्विक युद्धजीवियों ने नोबेल सम्पादन देने का नियन्य किया। पुरस्कार के एलान के बाद तुरंत स्वीडिश एकड़मी का ये कहना कि नोबेल पुरस्कार लास्जलो क्रास्नाहोरकाई को उनकी दूर्दारा, सर्वनाशकारी और दार्शनिक क्षमताओं के लिए साहित्य का नोबेल पुरस्कार दिया गया है। उन्हें करीब 10 करोड़ और तीन लाख रुपये बताए पर उत्तराखण्ड के तौर पर मिलते हैं। लेकिन उन्होंने बदलाई ही है, लेकिन उन्होंने पहले ही उन्होंने उस राशि को हंगरी के 'साहित्यक डेवेलपमेंट विंग' को देने की घोषणा कर दी है। उस धनराशि का पुस्तकालय बनें, ऐसी इच्छा क्रास्नाहोरकाई ने जताई है। क्रास्नाहोरकाई को उनकी सरल सादगी के लिए दुनिया जानती है। साहित्य, दो वक्त की रोटी, बेहद सामान्य जीवन के सिवा और कुछ उन्हें नहीं चाहिए? लास्जलो मौजूदा वक्त में योग्यता साहित्य के उन दुर्भार, अलहादा और विरले लेखकों में शुभार हैं, जिन्होंने हताशा के मध्य सफलता की नायाब भाषा को गढ़ा।

नोबेल विजेता क्रास्नाहोरकाई की लेखनी परंवेज जीवित इंसान के अंत और नैतिक पतन की परिस्थितियों में मेल खाती है। साहित्यक लेखन में बदलाव की दरकार है, जिसे शिद्धत से क्रास्नाहोरकाई ने अपने रचनाओं में दर्शाया है। नोबेल प्राइज मिलने से पूर्व क्रास्नाहोरकाई को 2015 में 'बुकर इंवरनेशन' अवार्ड मिला था। वहीं 2019 में अमेरिका का प्रसिद्ध 'नेशनल बुक अवार्ड' से भी नवाजे गए। इसके अलावा तीन दर्जन अवार्ड ऐसे मिले हैं, जो साहित्यिक क्षेत्र में बड़े माने जाते हैं। प्रत्येक पुरस्कारों की राशि उन्होंने औरैं में बांटी, अपने पास कुछ भी नहीं रखा।

भारत-अफगानिस्तान के बिंदुसार अधिकारी ने उनकी अवार्ड मिलने से खुशी एवं उत्सुकी की दरकार है। उन्होंने उसे एक जैसे निकलते हों, ये सारी कावयदें को जानी चाहिए? उत्तराखण्ड राज्य के एसी बर्सों के लिए अपने नैतिक पतन की परिस्थितियों में मेल खाती है। साहित्यक लेखन के बीच उम्मीदों को शब्दों से उकरने की आधुनिक समय में जरूरत है, जिसे शिद्धत से क्रास्नाहोरकाई ने अपने रचनाओं में दर्शाया है। नोबेल प्राइज मिलने से पूर्व क्रास्नाहोरकाई को 2015 में 'बुकर इंवरनेशन' अवार्ड मिला था। वहीं 2019 में अमेरिका का प्रसिद्ध 'नेशनल बुक अवार्ड' से भी नवाजे गए। इसके अलावा तीन दर्जन अवार्ड ऐसे मिले हैं, जो साहित्यिक क्षेत्र में बड़े माने जाते हैं। प्रत्येक पुरस्कारों की राशि उन्होंने औरैं में बांटी, अपने पास कुछ भी नहीं रखा।

स्वामी-रुहेलखण्ड इंटरराइजेज के लिए मुद्रक एवं प्रकाशक त्रिवेश शुक्ला द्वारा 25/16-ए, जालिम रोड, लखनऊ-226001 (उ.प्र.) से प्रकाशित एवं प्लाट नं.-42, निकट बड़ी नगर, इंडस्ट्रियल एरिया, नादरगंज, लखनऊ-226008 (उ.प्र.) से मुद्रित। संपादक- राजेश श्रीनेत, कार्यकारी संपादक- अनिल त्रिगुणायत*

0522-4008111 (कार्यालय), ईमेल-editorschoice@amritvichar.com, आर.एन.आई नं-50986/1989 *इस अंक में प्रकाशित समाचारों के चयन एवं संपादन हेतु पी.आर.बी.एक्ट की धारा 7 के अंतर्गत उत्तरदायी। (नोट-सभी विवादों की न्याय क्षेत्र लखनऊ होगा।)



ताकत हमेशा सोचती है कि उसकी आत्मा महान है और उसके विचार कमज़ोर लोगों की समझ से परे हैं।

-जॉन एडम्स, पूर्व अमेरिकी राष्ट्रपति

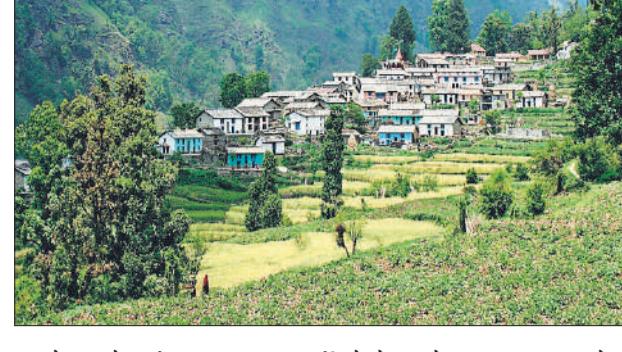
देवभूमि के गांवों में फिर जले खुशियों के दीप



अमित शर्मा

हस्तानी

नवंबर 2025 को हमारा उत्तराखण्ड 25 साल का हो जाएगा। इस लंबे अंतराल में इस छोटे से पर्वतीय राज्य ने तमाम उत्तर-चाढ़ाव देखे। इसमें कोई दो राय नहीं कि राज्य और केंद्र सरकार ने तमाम योजनाओं से लोगों की आर्थिकी को बहेतर करने का प्रयास किया और कर भी रही है, लेकिन भौगोलिक दुर्गम परिस्थितियों तो कहीं अन्य कारणों से, आज भी मूलभूत सुविधाओं और संसाधनों की कमी अव्वर



में पलायन के चलते गांवों की सुनसानी ने तेजी पकड़ी। ऐसे वीरांग हुए गांवों की लंबी-बौद्धी संख्या रही, जहां कहीं एक भी इंसान न होने पर, जिन्हें आम भाषा में भूतिया गांव भी कहा जाने लगा, तो कहीं पहाड़ों की गोद में बसे गांवों में गिनती भर वापसी को देखा जाता है। गांवों के लोग रह गए, हालांकि कोरोना परिवारों से जीवन किया जा सके।

पहाड़ों से युवाओं का प्रवास के बाद लंबी दूरी तक आया है। यह अपना कर भी रहा, लेकिन भौगोलिक दुर्गम परिस्थितियों के कारण

ह सच है कि एआई (आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस) के बढ़ते उपयोग के साथ बहुत से लोगों के मन में यह सवाल उठ रहा है कि क्या एआई उनकी नौकरियों को खतरे में डाल सकता है। यह एक सामान्य चिंता है, लेकिन यह पूरी तरह से सही नहीं है। दरअसल, एआई ट्रूल्स, जैसे चैटजीपीटी, टास्टक और ऑटोमेशन, डेटा प्रोसेसिंग और अन्य एआई-संचालित ट्रूल्स की मदद से काम करना अब पहले से कहीं ज्यादा आसान हो गया है, लेकिन इसका मतलब यह नहीं है कि एआई इंसानों की जगह ले सकता है, बल्कि

यह कह सकते हैं कि एआई इंसानों के काम करने के तरीके को और भी स्मार्ट व प्रभावी बना रहा है। एआई ट्रूल्स को भी कुछ दिशा-निर्देश देने होते हैं। इन दिशा-निर्देशों को प्रॉग्राम कहा जाता है और अच्छा प्रॉग्राम लिखकर एआई से आसानी से काम करवाया जा सकता है। इसलिए अच्छा प्रॉग्राम लिखने के लिए प्रॉग्राम इंजीनियर की जरूरत पड़ती है और आज मार्केट में प्रॉग्राम इंजीनियर की मांग तेजी से बढ़ रही है। और आज आपको बताते हैं क्या है प्रॉग्राम इंजीनियर और इसमें अपना करियर कैसे बना सकते हैं। -फीचर डेस्टक

क्या है प्रॉग्राम इंजीनियरिंग

प्रॉग्राम इंजीनियर का मतलब है एआई को ऐसे निर्देश देना कि वह हमारी जरूरत के हिसाब से सही और उपयोगी कंटेन्ट दे सके। उदाहरण के लिए अपर अप वेट जीपीटी से ब्लॉग पोस्ट या मार्केटिंग कंटेन्ट बनवाना चाहते हैं, तो सही प्रॉग्राम देने से ही एआई अपको स्टार्ट और टोन में काम को तैयार करेगा। इस कोर्स में अपने परिणामों को अपनी आवश्यकता के अनुसार प्रयोग करने कर सकते हैं।

कोर्स करने के फायदे

प्रोफेशनल रिकॉर्ड्स में सुधार: प्रॉग्राम इंजीनियरिंग सीखकर आप न केवल एआई ट्रूल्स का सही और उपयोग करना सीखेंगे, बल्कि अपको डेटा को सही तरीके से इनपुट करने और एआई के द्वारा दिए गए परिणामों को अपनी आवश्यकता के अनुसार प्रयोग करने कर सकते हैं।

करियर के नए अवसर

एआई क्षेत्र में करियर बनाने का यह एक बेहतरीन मौका है। प्रॉग्राम इंजीनियर बनने से आप न केवल नए तकनीकी क्षेत्रों में खुद को खापित कर सकते हैं, बल्कि बढ़ने हुए एआई उद्योग का इस्तेमाल कर सकें।



अमृत विचार

कैम्पस

प्रॉग्राम इंजीनियर से बनाए एआई में भविष्य

करियर में संभावनाएं

ग्रेट लैर्निंग, अपग्रेड और स्किल शेयर

ये प्लेटफॉर्म्स भारत में हिन्दी और अंग्रेजी दोनों भाषाओं में कोर्स संबंधित करते हैं, जिनसे आप अपने समय के अनुसार ऑनलाइन अध्ययन कर सकते हैं।

प्रॉग्राम इंजीनियरिंग से करियर में संभावनाएं

एआई के बढ़ते उपयोग को देखते हुए इस क्षेत्र में करियर की कई संभावनाएं नज़र आ रही हैं।

कंटेन्ट क्रिएटर्स

जो एआई ट्रूल्स का उपयोग करके कंटेन्ट बनाने में मदद ले सकते हैं।

प्रोग्रामर्स और डेवलपर्स

एआई सिरियस्स के लिए प्रभावी प्रॉग्राम डिजाइन कर सकते हैं।

बिजनेस एनालिस्ट्स

डेटा एनालिसिस और रिपोर्ट बनाने के लिए एआई ट्रूल्स का इस्तेमाल कर सकते हैं।

सही प्रॉग्राम का प्रभाव

यदि आप चैटजीपीटी से ब्लॉग पोस्ट, भार्किंग कंटेन्ट या कोडिंग के लिए मदद लेना चाहते हैं, तो सही तरीके से प्रॉग्राम देना ही जरूरी होता है। बिना सही प्रॉग्राम के एआई से अधिकतर रिजल्ट नहीं मिल सकते।

प्रॉग्राम इंजीनियरिंग का महत्व

एआई की सीमाएं और एथिकल यूज़

सही प्रॉग्राम के लिए एआई की सीमाएं और नैतिक तरीके से इस्तेमाल कैसे किया जाए। एआई से गलत या असवेदनशील जानकारी प्राप्त करने से बचने के लिए इस क्षेत्र में एथिकल गाइडलाइंस पर भी ध्यान दिया जाता है।

कैसे करें प्रॉग्राम इंजीनियरिंग कोर्स

अब इस क्षेत्र में शिक्षा प्राप्त करने के लिए कई प्लेटफॉर्म्स उपलब्ध हैं। कॉर्सेस, उड़ीपी और लिंकडिन लिंगों: ये प्लेटफॉर्म्स शुरुआत से लेकर एडवांस्ट स्तर तक के कोर्सेस ऑफर करते हैं और आपको सर्टिफिकेट भी प्रदान करते हैं।



आईआईटी शॉर्ट टर्म कोर्सेज

कुछ प्रतिष्ठित संस्थान जैसे आईआईटी पटना एआई और एमप्लायूमेंट से जुड़े कोर्सेज भी पेश करते हैं। आईआईटी का 6 महीने का एआई एमप्लायूमेंट एक बेहतरीन विकल्प हो सकता है। संस्थान जैसे आईआईटी पटना एआई सकता है।

प्रसार भारती

पद का नाम: ब्रॉडकास्ट एप्जीव्यूट्रिव, कॉर्पी राइटर और अन्य पदों की संख्या: 59 योग्यता: कोई भी स्नातक, बी.एससी., 12वीं, पीजी डिप्लोमा आयु सीमा: 20 से 35 वर्ष अंतिम तिथि: 21-10-2025 वेबसाइट: prasarbharati.gov.in

भारतीय सेना

पद का नाम: 143वां तकनीकी स्नातक पाठ्यक्रम ऑफिसर पदों की संख्या: 8,850 योग्यता - स्नातक अयु सीमा: 20 से 27 वर्ष अंतिम तिथि: 22/10/2025 वेबसाइट: southindianbank.bank.in

रेलवे भर्ती बोर्ड (आरआरबी)

पद का नाम: एनटीपीसी (रेशेन मास्टर, वक्तव्य और अन्य)

पदों की संख्या: 8,500 (एनटीपीसी स्नातक - 5000)

पदों की संख्या: 30 (एनटीपीसी स्नातक - 3050)

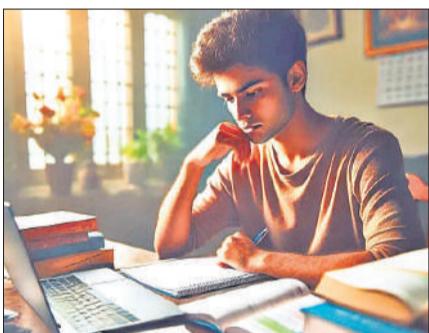
योग्यता: स्नातक, स्नातक (12वीं पास)

आयु सीमा: 20 से 27 वर्ष अंतिम तिथि: 28 अक्टूबर

वेबसाइट: joinindianarmy.nic.in

आयु सीमा: 20 वर्ष वर्ड: rrbcdg.gov.in

सही स्टैटजी है नेट में सफलता का मूल मंत्र



नोट्स बनाएं

सही नोट्स बनाएं: ये एप्लीकेशनों को छोटे-छोटे हिस्सों में बांट ले और दिन, सप्ताह और महीने के लिए लक्ष्य निर्धारित करें।

समय का आवंटन: ऐपर 1 और ऐपर 2 दोनों को समान महत्व दें। ऐपर 1 की तैयारी रोजाना करें, क्योंकि यह रक्की बढ़ाने में मदद करता है।

योग्यता की परीक्षा और सिलेबस को समझें

परीक्षा पैटर्न और योग्यता की परीक्षा को समझें। यह सभी नोट्स में दो प्रैग्नेट होते हैं।

परीक्षा पैटर्न: यह सभी उपीदावारों के लिए सामान्य होता है और इसमें शिक्षण, शोध योग्यता, वर्क शीट्स, डेटा इंटरप्रेटेशन और सामान्य जागरूकता के प्रश्न होते हैं।

परीक्षा पैटर्न 2: यह आपके द्वारा हुए विषय पर आधारित होता है।

सिलेबस: आपने विषय के अनुसार, एनटीए की अधिकारिक वेबसाइट से विस्तृत सिलेबस डाउनलोड कर और प्रत्येक यूनिट को ध्यान से समझें।

टाइम ट्रैबल बनाएं

योग्यता की परीक्षा को छोटे-छोटे हिस्सों में बांट ले और दिन, सप्ताह और महीने के लिए लक्ष्य निर्धारित करें।

समय का आवंटन: ऐपर 1 और ऐपर 2 दोनों को समान महत्व दें। ऐपर 1 की तैयारी रोजाना करें, क्योंकि यह रक्की बढ़ाने में मदद करता है।

योग्यता की परीक्षा और सिलेबस को समझें

परीक्षा पैटर्न और योग्यता की परीक्षा को समझें। यह सभी नोट्स में दो प्रैग्नेट होते हैं।

परीक्षा पैटर्न 2: यह सभी उपीदावारों के लिए सामान्य होता है और इसमें शिक्षण, शोध योग्यता, वर्क शीट्स, डेटा इंटरप्रेटेशन और सामान्य जागरूकता के प्रश्न होते हैं।

सिलेबस: आपने विषय के अनुसार, एनटीए की अधिकारिक वेबसाइट से विस्तृत सिलेबस डाउनलोड कर और प्रत्येक यूनिट को ध्यान से समझें।

कैम्पस की परीक्षा और सिलेबस को समझें

परीक्षा पैटर्न और योग्यता की परीक्षा को समझें। यह सभी नोट्स में दो प्रैग्नेट होते हैं।

परीक्षा पैटर्न 2: यह सभी उपीदावारों के लिए सामान्य होता है और इसमें शिक्षण, शोध योग्यता, वर्क शीट्स, डेटा इंटरप्रेटेशन और सामान्य जागरूकता के प्रश्न होते हैं।

सिलेबस: आपने विषय के अनुसार, एनटीए की अधिकारिक वेबसाइट से विस्तृत

